हिंदी (ऐच्छिक)

कक्षा–12

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र–I

समय : 3 **घंटे** **पूर्णांक :** 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5+5=10

(क) वैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है। जिससे हमें दु:ख पहुंचा है, उस पर यदि हमने क्रोध किया और यह क्रोध हमारे हृदय में बहुत दिनों तक टिका रहा तो वह वैर कहलाता है। इस स्थायी रूप में टिक जाने के कारण क्रोध का वेग और उग्रता तो धीमी पड़ जाती है, पर लक्ष्य को पीड़ित करने की प्रेरणा बराबर बहुत काल तक हुआ करती है। क्रोध अपना बचाव करते हुए शत्रु को पीड़ित करने की युक्ति आदि सोचने का समय प्राय: नहीं देता।

(ख) इतना सच जान पड़ता है कि भीष्म के कर्तव्य–अकर्तव्य के निर्णय में कहीं कोई कमजोरी थी। वह उचित अवसर पर उचित निर्णय नहीं ले पाते थे। यद्यपि वह जानते बहुत थे, तथापि कुछ निर्णय नहीं ले पाते थे। उन्हें अवतार न मानना ठीक ही हुआ। आजकल भी ऐसे विद्वान मिल जाएंगे, जो जानते बहुत हैं, करते कुछ भी नहीं। करने वाला इतिहास–निर्माता होता है, सिर्फ सोचने वाला इतिहास के भयंकर रथ–चक्र के नीचे पिस जाता है। इतिहास का रथ वह हांकता है जो सोचता है और सोचे को करता भी है।

(ग) हिंदी–साहित्य के यथार्थवादी कलेवर में कला, कोसने–भर की चीज रह गई है। पर कला भी प्रकृति की तरह बदला लेना खूब जानती है। यथार्थ और समाज में सेंध लगाते, भाषा से खेलते लोग, कलम थामे बैठे रहते हैं कि कल्पना या सौंदर्यानुभूति हाथ चलवाए तो रचना बने। एक बार लिखी जाए तो फिर से जी–भर कला को कोसा जा सकता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही तीन के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में दीजिए : 3+3+3=9

(क) 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' पाठ के लेखक युवाओं को घुमक्कड़-धर्म ग्रहण करने का परामर्श क्यों देते हैं?

(ख) 'व्यक्ति की एक झलक' पाठ में लेखक ने प्रसाद के व्यक्तित्व के बाह्य और भीतरी स्वरूप की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

(ग) मिशनरी भाव की निंदा और ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निंदा में क्या अंतर है? 'निंदा रस' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'मेरी जीवन यात्रा: दो चित्र' पाठ के आधार पर टिप्पणी कीजिए कि लेखक के जीवन के ये दो चित्र बदलती सामाजिक मानसिकता के परिचायक हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिए : 3+3=6

(क) पर्यावरण या विकास और अस्तित्व या विनाश निबंध के माध्यम से लेखक ने आज के राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन के संदर्भ में कौन-कौन सी समस्याएं उठाई हैं?

(ख) ''जिसने कभी तलवार नहीं चलाई, वह इरादा करने पर भी तलवार नहीं चला सकता।'' 'मंत्र' कहानी के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(ग) क्रोध कब सौंदर्य-दशा को प्राप्त कर लेता है? 'क्रोध' निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

4. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 5+5=10

(क) सरवर तीन पद्मनी आई। खोंपा छोरि केस मुकुलाई।।
ससि-मुख, अंग मलयगिरि बासा। नागिन झाँपि लीन्ह चहुँ पासा।।
ओनई घटा परी जग छाहाँ। ससि के सरन लीन्ह जनु राहाँ।।
छपि गै दिनहिं भानु कै दसा। लेइ निसि नखत चांद परगसा।।
भूलि चकोर दीठि मुख लावा। मेघ घटा महँ चंद देखावा।।

अथवा

मोहि मूढ़ मन बहुत बिगोयो।
याके लिए सुनहु करूनामय मैं जग जनमि-जनमि दुख रोयो।।
सीतल मधुर पीयूष सहज सुख निकटहिं रहत, दूर जनु खोयो।।
बहु भाँतिन स्रम करत मोह बस बृथहिं मंदमति बारि बिलोयो।।
करम-कीच जिय, जानि, सानि चित, चाहत कुटिल मलहिमल धोयो।
तृषावंत सुरसरि बिहाय सठ, फिरि-फिरि बिकल अकास निचोयो।।

तुलसिदास प्रभु कृपा करहु अब, मैं निज दोष कछू नहिं गोयो।
डासत ही गइ बीति निसा सब, कबहुँ न नाथ नींद भरि सोयो।

(ख) भारत नहीं स्थान का वाचक गुण-विशेष नर का है,
एक देश का नहीं शील यह भू-मंडल भर का है।
जहाँ कहीं एकता अखंडित जहां प्रेम का स्वर है,
देश-देश में वहां खड़ा भारत जीवित भास्वर है।
निखिल विश्व की जन्मभूमि वंदन को नमन करूँ मैं।
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं?

अथवा

हरे-हरे ये पात,
डालियाँ-कलियाँ, कोमल गात।
मैं ही अपना स्वप्न-मृदुल-कर
फेरूंगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर
पुष्प-पुष्प से तंद्रालस लालसा खींच लूँगा मैं
अपने नव जीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं।

5. (क) 'ओ मेरे मन' कविता में 'कनात,' 'बिस्तर' और 'टेरियार कुत्ते' प्रतीक कैसे व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त किए गए हैं? 3

(ख) ''लैंप पोस्ट तो मैं भी जला सकता हूँ'' 'पहचान' कविता के इस कथन के संदर्भ में बुद्धिजीवी वर्ग की भूमिका स्पष्ट कीजिए। 2

6. निम्नलिखित काव्यांश का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए: 5

अनुखन माधव-माधव सुमिरइते, सुंदरि भेलि मधाई।
ओ निज भाव सुभाबहि बिसरल, अपनेहि गुन लुबुधाई।।
माधव अपरूप तोहर सिनेह।
अपनेहि बिरहें अपन तनु जरजर, जिबइते भेज संदेह।।

अथवा

यह महा दंभ का दानव
पीकर अनंग का आसव

कर चुका महा भीषण रव
सुख दे प्राणी को मानव,
तज विजय-पराजय का कुढ़ंग।

7. तुलसीदास अथवा रामधारी सिंह 'दिनकर' के जीवन, रचनाओं और काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 5

8. (क) 'रंगभूमि' उपन्यास के कथानक की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 4

अथवा

'रंगभूमि' उपन्यास के संवाद पात्रों के चरित्रांकन में सहायक हुए है।''- इस कथन के आलोक में उपन्यास की संवाद-योजना पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(ख) ''सूरदास गांधीवादी विचारों के वाहक, मानवीय गुण-दोषों से युक्त पुरुष हैं।'' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में सूरदास का चरित्र-चित्रण कीजिए। 4

अथवा

''प्रभु सेवक आत्मसेवी से ही जन-सेवी बनने वाला विकासशील पात्र है''- इस कथन के आलोक में प्रभु सेवक के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

9. (क) ''रंगभूमि जन-जागरण का उपन्यास है''- इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क-सम्मत उत्तर दीजिए। 4

अथवा

'रंगभूमि भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम की महागाथा है।'- इस उक्ति के आधार पर 'रंगभूमि' उपन्यास की देशकाल और वातावरण-योजना पर प्रकाश डालिए।

(ख) ''भाषा-शैली की दृष्टि से 'रंगभूमि' एक उत्कृष्ट औपन्यासिक कृति है।''- इस कथन का युक्ति युक्त विवेचन कीजिए। 3

10. ''रीतिकालीन कविता का प्रधान स्वर श्रृंगार परक है।''- इस कथन की पुष्टि करते हुए रीतिकालीन साहित्य की तीन प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 4

अथवा

संत काव्य की किन्ही तीन प्रवृत्तियों को स्पष्ट करते हुए इस काल के दो प्रमुख कवियों के नाम भी लिखिए।

11. छायावाद को ''स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह'' क्यों कहा जाता है? छायावादी काव्य की चार प्रमुख विशेषताओं को भी स्पष्ट कीजिए। 5

अथवा

प्रगतिवादी काव्य की चार प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए इस काल के दो कवियों का नामोल्लेख कीजिए।

12. प्रेमचंद-युगीन हिंदी-उपन्यास साहित्य पर प्रकाश डालिए। **4**

अथवा

प्रसाद युगीन हिंदी-नाटक साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 400 शब्दों में निबंध लिखिए: **12**

(क) विश्व में बढ़ता आतंकवाद

(ख) कंप्यूटर-आज की आवश्यकता

(ग) सबसे न्यारा देश हमारा

(घ) नर हो न निराश करो मन को

(ङ) राष्ट्र-निर्माण में साहित्य का योगदान

14. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

आवश्यकतानुरूप प्रत्येक को कार्य करना पड़ता है। कर्म से कोई मुक्त नहीं है। एक अत्यंत उच्चस्तरीय आध्यात्मिक पुरूष अथवा उसके विपरीत वैचारिक क्षमता से हीन व्यक्ति ही बिना कर्म के रह सकता है। इन दोनों श्रेणियों के मध्यवर्ती लोगों को कार्य करना पड़ता है। गीता कहती है-यदि तुम स्वेच्छा से कार्य नहीं करोगे तो प्रकृति तुम से बलात् कर्म कराएगी। और सही भावना से अनुष्ठित कर्म धार्मिक हो जाता है- इस दृष्टि से जो राजनीति के माध्यम से मानवता की सेवा करना चाहते हैं उन्हें उपेक्षित नहीं किया जा सकता। यदि वे उचित भावना से कार्य करें तो वे अपने कार्यों को आध्यात्मिक स्तर तक उठा सकते हैं। यह समय की पुकार है। जो राजनीति में प्रवेश पाना चाहते हैं, वे यह कार्य एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण लेकर, परोपकारिता का उच्च भाव लेकर करें और दिन-प्रतिदिन आत्मविश्लेषण, अंतर्दृष्टि, सतर्कता और सावधानी के भाव लेकर अपने आप का परीक्षण करें, जिससे वे सन्मार्ग से च्युत न होने पाएँ।

(i) कर्म से मुक्ति संभव क्यों नही है? 1

(ii) कर्म आध्यात्मिक साधना कैसे बन सकता है? 1

(iii) सही भावना से कर्म क्यों करना चाहिए? 1

(iv) राजनीति में प्रवेश करने के इच्छुक व्यक्तियों को अपने कर्म किस प्रकार करने चाहिए? 1

(v) उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

15. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

एक दिन सहसा
सूरज निकला
और क्षितिज पर नहीं,
नगर के चौक
धूप बरसी
पर अंतरिक्ष से नहीं
फटी मिट्टी से।
छायाएं मानव जन की
दिशाहीन
सब ओर पड़ीं-वह सूरज
नहीं उगा था पूरब में, वह
बरसा सहसा
बीचो-बीच नगर के
काल-सूर्य के रथ के
पहियों के ज्यों अरे टूटकर
बिखर गए हों
दसों दिशा में
कुछ क्षण का वह उदय-अस्त।
केवल एक प्रज्वलित क्षण की
दृश्य सोख लेने वाली दोपहरी
फिर?
छायाएँ मानव-जन की
नहीं मिटी लंबी हो-होकर
मानव ही सब भाप हो गए।
छायाएं तो अभी लिखी हैं।
झुलसे हुए पत्थरों पर
उजड़ी सड़कों की गच पर।

(i) क्षितिज से न उगकर नगर के बीचों-बीच बरसने वाला 'वह सूरज' क्या था? 1

(ii) वह दुर्घटना कब कहाँ, घटी थी? 1

(iii) उसे 'कुछ क्षण का 'उदय-अस्त' क्यों कहा गया है? 1

(iv) 'मानव ही, सब भाप हो गए' कथन का क्या आशय है? 1

(v) इस घटना के प्रमाण आज किस रूप में प्राप्त होते हैं? 1

हिंदी (ऐच्छिक)

कक्षा–12

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र–I

अंक–योजना, उत्तर–संकेत और मूल्य–बिंदु

समय : 3 **घंटे** **पूर्णांक :** 100

प्र. संख्या	**अपेक्षित उत्तर–संकेत और मूल्य–बिंदु**	**अंक–विवरण/योग**
1.	केवल दो गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित	5+5=10
	अंक–विभाजन:	
	(i) लेखक तथा पाठ का नामोल्लेख	0½+0½
	(ii) प्रसंग (पूर्वापर संबंध–निर्वाह)	0½
	(iii) व्याख्या (प्रमुख बिंदुओं का स्पष्टीकरण)	2½
	(iv) भाषा–शैली पर टिप्पणी	1
		कुल अंक–5

(i) **प्रसंग:** प्रस्तुत गद्यांश आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित 'क्रोध' नामक निबंध से अवतरित है। इस गद्यांश में क्रोध और बैर मनोभावों के स्वरूप को बताते हुए दोनों के अंतर को स्पष्ट किया गया है।

व्याख्या–बिंदु : मन में बहुत दिनों तक रहने पर क्रोध बैर में बदल जाता है। क्रोध का स्थायी और परिपक्व रूप ही बैर है। समय के अंतराल के साथ क्रोध की गति मंद हो जाती है। क्रोध में शत्रु से बचाव का उपाय नहीं सूझता।

विशेष: विश्लेषणात्मक, विचारात्मक और सूत्रात्मक शैली। तत्सम बहुल, किंतु सहज एवं प्रवाह–पूर्ण भाषा का प्रयोग।

(ii) **प्रसंग:** प्रस्तुत पंक्तियां आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी-कृत 'भीष्म को क्षमा नहीं किया गया' नामक निबंध से ली गई हैं। भीष्म की चारित्रिक दुर्बलता का वर्णन करते हुए कहा गया है कि केवल चिंतन करने की अपेक्षा कर्म करने वाला ही इतिहास में अमर होता है।

व्याख्या-बिंदु : भीष्म में समय पर निर्णय ले पाने की क्षमता न थी। ज्ञान का व्यावहारिक पक्ष अधिक महत्वपूर्ण है, विचार और कर्म का संबंध रखनेवाला व्यक्ति ही इतिहास रचता है।

विशेष : विचारात्मक शैली, सूक्तिमयता, तत्सम प्रधान साहित्यिक भाषा का प्रयोग।

(iii) **प्रसंग :** प्रस्तुत गद्यांश मृदुला गर्ग द्वारा रचित निबंध 'दिल से गए दिल्ली में' से उद्धृत है। इसमें यथार्थवादी लेखकों द्वारा किए जा रहे कला-विरोध पर टिप्पणी की गई है।

व्याख्या-बिंदु : साहित्य में यथार्थवादी और कलावादी-दो प्रवृत्तियां पनप रही हैं। यथार्थवादी कल्पना की अपेक्षा वास्तविकता को महत्व देते हुए कला को कोसते हैं। बदला लेने की नीयत से वे यथार्थ और समाज में घुसपैठ करते हैं। वे कल्पना या सौंदर्यानुभूति मन-मस्तिष्क में होने पर ही लिख पाते हैं।

विशेष : व्यंग्यात्मक एवं विचारात्मक शैली, मुहावरों का सटीक प्रयोग, गंभीर एवं प्रांजल भाषा।

2. किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में अपेक्षित हैं: 3+3+3=9

अंक-विभाजन :

(i) कथ्य 2

(ii) भाषा-शुद्धता 1

(i) युवावस्था ही घूमने के लिए उपयुक्त है, घुमक्कड़ी से ज्ञान में वृद्धि होती है, संघर्ष करने की क्षमता बढ़ती है, व्यक्तित्व में निखार आता है और नए-नए अनुभव प्राप्त होते हैं।

(ii) प्रसाद का संपूर्ण व्यक्तित्व दिव्य एवं मोहक था। मृदुल मुस्कान से युक्त, धैर्यपूर्वक बातें करना, सच्चे मित्र, मस्तमौला और व्यवहार कुशल-उनका आंतरिक स्वरूप-आनंदवादी, नाम व यश की आकांक्षा से परे, सभी समीक्षाओं पर तटस्थ बने रहना आदि।

(iii) मिशनरी भाव की निंदा बैर और द्वेष-रहित, भेदभाव-रहित, निर्लिप्त तथा पवित्र भाव से, बिना किसी का अहित चाहे, सिर्फ आनंद प्राप्ति के लिए होती है। यह निंदकों के लिए टॉनिक होती है। ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निंदाहीनता और कमजोरी छिपाने के लिए तथा अहं की तुष्टि के लिए होती है। निंदक ईर्ष्या की आग में जलता रहता है और उसमें दूसरों के अहित का भाव छिपा होता है।

(iv) पहला चित्र लेखक के बचपन का है, जिसमें रूढ़िवादी सामंती मानसिकता के कारण लोग यह स्वीकार नहीं कर पाते कि एक दलित बालक भी पढ़ाई का अधिकारी है। दूसरा चित्र उनकी किशोर अवस्था का है, जब वे जबलपुर प्रशिक्षण-संस्थान में अध्ययन कर रहे थे। वहां उन्हें सभी जाति और वर्ग के लोगों से सहयोग और सम्मान मिला।

3. किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में अपेक्षित हैं। तीन बिंदुओं में प्रश्न का उत्तर समाहित हो। 3+3=6

(i) **समस्याएँ :** पर्यावरण-प्रदूषण में वृद्धि की समस्या, प्राकृतिक संसाधनों की कमी, जैविक विविधता का ह्रास, गरीब और अमीर के बीच की खाई, लोगों के उजड़ने की समस्या, स्वास्थ्य की समस्या आदि।

(ii) **भगत का स्वभाव :** दयालु एवं परोपकारी था। उनके स्वभाव में था निष्काम भाव से लोक-कल्याण करना, किसी का अहित न करना। डा. चड्ढ़ा के प्रति क्रोध एवं प्रतिकार की भावना के बावजूद वह उसके पुत्र की प्राण-रक्षा के लिए पहुंच जाते हैं।

(iii) जिस क्रोध में संपूर्ण लोक का दु:ख और क्षोभ समाया हो, प्राणी-मात्र का दु:ख और सहानुभूति छिपी हो, व्यक्तिगत हित की भावना न हो, समाज की भलाई के लिए अत्याचारी के दमन का भाव हो। जैसे श्रीराम ने रावण का और श्रीकृष्ण ने शिशुपाल का वध किया था। अत: लोक कल्याणकारी क्रोध ही सौंदर्य-दशा को प्राप्त करता है।

4. दो काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित है: 5+5=10

(i) कवि, कविता का नाम ½+½=1

(ii) प्रसंग (पूर्वापर संबंध-निर्वाह) ½

(iii) व्याख्या (प्रमुख भाव-बिंदुओं का स्पष्टीकरण) 2½

(iv) अभिव्यक्ति-कौशल और भाषिक कुशलता 1

कुल अंक : 5

प्रसंग : प्रस्तुत काव्यांश मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित महाकाव्य 'पद्मावत' के मानसरोवर खंड से उद्धृत है। मानसरोवर पर पद्मावती अपनी सखियों के साथ आती है, इस काव्यांश में रूप-सौंदर्य का अनुपम वर्णन किया गया है।

व्याख्या-बिंदु : चंद्रमा जैसे मुख वाली पद्मावती के अंगों से निकलने वाली चंदन जैसी सुगंध से आकर्षित होकर नागिन रूपी मुक्त केशों का पद्मावती के मुख को ढंक लेना। श्यामल केश-राशि के बीच चंद्रमा के समान उसका मुखमंडल इस प्रकार सुशोभित हो रहा है मानो राहु ने चंद्रमा की शरण

ली हो। दिन के समय ही मानों सूर्य छिप गया हो और चंद्रमा विभिन्न नक्षत्रों के साथ उदित हुआ हो।

विशेष : पद्मावती परमात्मा का प्रतीक है। यहां उसका अलौकिक सौंदर्य-वर्णन किया गया है। अलंकार हैं-रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रांतिमान आदि-अवधी भाषा का प्रयोग।

अथवा

प्रसंग : महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित प्रस्तुत पद में संसार में आसक्ति के कारण भक्ति से विरक्ति का वर्णन करते हुए कवि द्वारा अपने पश्चाताप-बोध का प्रभु के समक्ष निवेदन किया गया है।

व्याख्या-बिंदु : मूर्ख मन द्वारा भटकाए जाने के कारण ही जीवात्मा जन्म-मरण का दु:ख भोग रही है तथा मन के कारण ही अमृत के समान शीतल, मधुर भक्ति का आनंद पाने से वह वंचित है। सुख-प्राप्ति-हेतु मोहवश किया गया परिश्रम पानी को मथकर घी निकालने जैसा व्यर्थ है। जीवन-भर सुखों को प्राप्त करने का प्रयत्न ऐसा है, जैसे बिस्तर बिछाते-बिछाते रात बीत जाए और सुख की नींद प्राप्त न हो।

विशेष : शुद्ध साहित्यिक ब्रज भाषा का प्रयोग। अलंकार-अनुप्रास, पुनरूक्ति प्रकाश, दृष्टांत, समासोक्ति आदि। पद छंद एवं रस-'शांत'।

(ख) **प्रसंग :** कविकर रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'किसको नमन करूं मैं' की इन पंक्तियों में प्रेम और सदाचार की शिक्षा देने के कारण भारत को संपूर्ण विश्व के लिए वंदनीय माना गया है।

व्याख्या-बिंदु : भारत को किसी भौगोलिक सीमा में नहीं बांधा जा सकता। वह तो एक विशेष गुण और भावना का नाम है। भारत का शील व सदाचार विश्व के लिए अनुकरणीय रहा है। भारत ने विश्व को एकता, अखंडता और प्रेम का संदेश दिया है, वह सबके के लिए वंदनीय है।

विशेष : भारत के जगद्गुरु गौरव का वर्णन किया गया है। भाषा तत्सम शब्दावलीयुक्त खड़ी बोली है। भाषा में ओज गुण है। अनुप्रास तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग।

अथवा

प्रसंग : प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता 'ध्वनि' से उद्धृत है। कवि ने जीने की प्रबल आकांक्षा व्यक्त करते हुए आत्मविश्वास का भाव प्रकट किया है।

व्याख्या-बिंदु : वसंत के आगमन से सभी कलियां खिल जाती हैं, मैं भी उसी प्रकार आलस्य की निद्रा में डूबे नवोदित कलाकारों को अपनी कविताओं से जगाऊंगा, उन्हें नए सृजन की प्रेरणा दूंगा।

विशेष : कवि का जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अभिव्यक्त हुआ है। भाषा–साहित्यिक खड़ी बोली; शैली में चित्रात्मकता एवं भाषा में लाक्षणिकता का गुण है। सुंदर प्रतीक-योजना और अलंकार–अनुप्रास, रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश आदि।

5. **अंक-विभाजन :**

(i) कथ्य 2

(ii) भाषा-शुद्धता 1

कुल अंक : 3

(क) प्रत्येक बिंदु के लिए एक अंक 1+1+1=3

कनात : पापाचार-दुराचार करने वालों को मौन होकर देखने तथा उनके काले कारनामों पर पर्दा डालने वाले।

बिस्तर : कुकर्म करने वाले लोगों को सहयोग देने वाले।

टेरियार कुत्ते : अपने स्वामी के स्वार्थ-सिद्ध करने में हिंसक ढंग से सहयोग देने वाले।

(ख) (दो मुख्य बिंदुओं का स्पष्टीकरण) 1+1=2

लैंप पोस्ट जलाने का प्रतीकार्थ है–चेतना जाग्रत करना–बुद्धिजीवी वर्ग अपनी विचार शक्ति से, ज्ञान के प्रकाश से, और लेखनी की ताकत से सामान्य जन में चेतना ला सकता है, समाज में फैले अन्याय-अत्याचार का विरोध कर सकता है।

6. किसी एक काव्यांश का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करना अपेक्षित है:

अंक-विभाजन : (i) भाव-सौंदर्य 2

(ii) शिल्प-सौंदर्य 2

(iii) भाषा-सौंदर्य/शुद्धता 1

कुल अंक : 5

भाव-सौंदर्य : विद्यापति द्वारा रचित 'पदावली' की इन पंक्तियों में राधा की विरहावस्था का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया गया है। राधा माधव-माधव करती हुई माधवमय हो गई है। स्वयं को भूल गई है। राधा माधव के रूप में अपने ही गुणों पर मोहित होने लगी है। सघन प्रेमानुभूति और विरह की चरम अवस्था का मार्मिक चित्रण किया गया है।

शिल्प-सौंदर्य : विरह की चरम अवस्था का मार्मिक चित्रण किया गया है।

(i) रस– विप्रलंभ श्रृंगार

(ii) भाषा– साहित्यिक मैथिली भाषा

(iii) गुण– कविता में माधुर्य गुण

अलंकार–अनुप्रास, पुनरूक्ति प्रकाश, अतिशयोक्ति आदि।

सब मिलाकर विद्यापति की इस रचना में भाव और शिल्प का अद्‌भुत संयोग बन पड़ा है।

अथवा

भाव-सौंदर्य : जय शंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता 'अशोक की चिंता' की इन पंक्तियों में कवि ने विजयी अशोक के अंतर्द्वंद्व द्वारा विजय की निरर्थकता और मानवता की उपयोगिता का

संदेश दिया है। युद्ध या हिंसा छोड़कर हमें सबके कल्याण-हेतु कर्म करने चाहिए। भावानुभूति की सघनता और व्यापकता का मार्मिक चित्रण।

शिल्प-सौंदर्य : भाषा-शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली। 'अनंग का आसव' और 'महादंभ का दानव' में रूपक अलंकार है। कवि ने रूपकों के द्वारा अन्तर्द्वंद्व का मार्मिक चित्रण किया है। छायावादी शैली के प्रभाव-स्वरूप लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता आदि विशेषताएं परिलक्षित होती हैं। कुल मिलाकर इन पंक्तियों में भाव और शिल्प का संतुलित सौंदर्य व्यक्त हुआ है।

7. किसी एक कवि का जीवन-परिचय अपेक्षित है:

अंक-विभाजन : (i) जीवन-परिचय 1

(ii) रचनाएं व साहित्यिक कार्य 2

(iii) काव्यगत विशेषताएं 2

कुल अंक : 5

तुलसीदास का जन्म सन् 1532 ई. में बांदा जिले (उ.प्र.) के राजापुर नामक गांव में हुआ था। पिता आत्माराम दूबे और माता हुलसी थी। बाबा नरहरिदास ने उनका पालन-पोषण किया तथा उन्हें शिक्षा-दीक्षा प्रदान की।

रचनाएं : 'रामचरितमानस' 'पार्वती मंगल,' 'विनय पत्रिका' 'कवितावती,' 'दोहावली,' 'श्रीकृष्ण गीतावली,' 'रामलला नहछू'।

काव्यगत विशेषताएं : अवधी एवं ब्रज–दोनों भाषाओं पर समान अधिकार। प्रबंध एवं मुक्तक– दोनों काव्य-शैलियों में समान दक्षता से रचनाएं कीं। दोहा, चौपाई, कवित्त सवैया, छप्पय आदि छंदों का प्रयोग किया। श्रृंगार, वीर, वात्सल्य, शांत आदि सभी रसों का सुंदर प्रयोग इनकी रचनाओं में है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का सहज प्रयोग।

अथवा

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार राज्य के मुंगेर जिले में सिमरिया नामक गांव में 1908 ई. में हुआ था। पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. (ऑनर्स) के बाद उच्च विद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर कार्य किया। 1952 ई. में संसद सदस्य मनोनीत हुए। भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति और भारत सरकार के हिंदी सलाहकार रहे।

रचनाएं (काव्य) : 'रेणुका', 'हुंकार', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'सामधेनी' और 'उर्वशी'। 'उर्वशी' ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित काव्य है।

गद्य : 'संस्कृति के चार अध्याय', 'मिट्टी की ओर', 'शुद्ध कविता की खोज', 'अर्धनारीश्वर', 'काव्य की भूमिका'।

काव्यगत-विशेषताएं : इनके काव्य में सौंदर्य, प्रेम और मानवीय संवेदनओं का मार्मिक अंकन किया गया है। भाषा में ओज और प्रवाह है; व्यंग्यात्मकता और संवादात्मकता इनकी भाषा की अन्य विशेषताएं हैं।

8. (क) **अंक-विभाजन :** (i) कथ्य 3

(ii) भाषा-शुद्धता 1

कुल अंक : 4

'रंगभूमि' के कथानक की प्रमुख विशेषताएँ : कथानक अत्यंत मौलिक है। इसमें गठन है। कथा की सभी घटनाएं क्रमबद्ध व गुंफित हैं एवं उनमें रोचकता और जिज्ञासा अंत तक बनी रहती है। उपन्यास अपने उद्देश्य को स्पष्ट करने में पूर्णतया सफल है। मुख्य कथा और प्रासंगिक कथाएं सहजता से जुड़ी हुई हैं। पात्रों के मानसिक अंतर्द्वंद्व को प्रभावी ढ़ंग से अभिव्यक्त करने में कथावस्तु पूर्ण सक्षम है। कथाशिल्प या कथानक उद्देश्यपूर्ण है। कथानक की दृष्टि से 'रंगभूमि' एक सफल रचना है।

अथवा

उपन्यास की समीक्षा के तत्वों में कथोपकथनों या संवादों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। उपन्यास में संवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे कथा के विकास में सहायक होते हैं, पात्रों के चरित्रांकन को प्रभावी ढ़ंग से प्रस्तुत करते हैं। यथा–सूरदास, सोफिया, विनय, रानी, इंदु, कुंअर साहब, प्रभु सेवक आदि सभी पात्रों के संवाद उनकी चारित्रिक विशेषताओं को सहज ही उजागर करते हैं।

'रंगभूमि' के संवाद पूर्णत: पात्रानुकूल एवं प्रसंगानुकूल हैं। पात्रों के मानसिक अंतर्द्वंद्व को भी प्रभावी ढ़ंग से चित्रित करते हैं।

(ख) सूरदास के माध्यम से लेखक ने समग्र गांधीवाद को ही नहीं वरन् स्वयं गांधी को साकार कर दिया है। सूरदास गांधीवादी विचारों का वाहक हैं। अहिंसा, सत्य, त्याग और धर्म का जो सुंदर समन्वय सूरदास के चरित्र में हुआ है, वह विलक्षण है। इन मानवेतर गुणों के साथ-साथ सहज मानवीय गुण-दोष भी उसके व्यक्तित्व में पाए जाते हैं। (जैसे–घीसू द्वारा तंग करने पर और घीसू को चोट लगने पर सबके द्वारा प्रताड़ित करने के बाद भैरों को चिढ़ाना, मिट्ठू के प्रति लगाव, झोंपड़ी में आग लगने पर पैसों की थैली को तलाशना आदि उदाहरणों से सहज मानवीय गुण-दोषों का स्पष्टीकरण) सहृदयता की भावना, अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाना, साहसी व निर्भीक, औद्योगीकरण व पूंजीवादी व्यवस्था का तीव्र विरोधी तथा क्षमाशीलता आदि गुण उसमें विद्यमान हैं।

अंक 3 + 1 = 4

अथवा

प्रभु सेवक की चारित्रिक विशेषताएं–सहृदयता की भावना, लोभ-लालसा से मुक्त, सौंदर्यवादी व आनंदवादी, अच्छा कवि, उत्साही और साहसी, आदर्शवादी, स्वाभिमानी, संयम व त्याग की भावना, मानवता का पुजारी, विषमताओं से न घबराने वाला आदि। उपन्यास की घटनाओं के आलोक में इन विशेषताओं का स्पष्टीकरण अपेक्षित है।

9.(i) 'रंगभूमि' जन-जागरण का उपन्यास है। सूरदास का अन्याय के विरूद्ध अपील करना, पूंजीवादी व्यवस्था की स्वार्थपरता और शोषण के विरूद्ध जागृति लाना, कुँअर साहब, रानी जाह्नवी, डा. गांगुली, इंद्रदत्त, विनय, सोफिया आदि के उदाहरण द्वारा समिति के विभिन्न कार्यों का उल्लेख करते हुए जन-जागरण और मानव-सेवा के उच्च आदर्शों का स्पष्टीकरण अपेक्षित है। 4

अथवा

'रंगभूमि' उपन्यास भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की महागाथा है। 'रंगभूमि' उस समय के राजनीतिक संघर्ष को पाठकों के समक्ष बड़ी यथार्थता से प्रस्तुत करता है। इसके साथ ही ग्रामीण तथा नगर संस्कृतियों का संघर्ष भी यहां चित्रित हुआ है। इस उपन्यास में देशी नरेशों के अत्याचार और पूंजीवादी दोषों का भी हृदयहारी चित्रण मिलता है। यह उपन्यास तत्कालीन देशकाल और वातावरण की यथार्थता को स्वाभाविक रूप में चित्रित करता है। उस समय का सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिवेश पाठकों के समक्ष साकार हो उठता है। (उपन्यास के अनेक उदाहरणों के आलोक में इन बिंदुओं का स्पष्टीकरण अपेक्षित है)

9.(ii) प्रेमचंद की भाषा में आम बोलचाल के शब्दों के साथ अंग्रेजी तथ उर्दू के शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। इनकी भाषा सहज, स्वाभाविक, रोचक, प्रवाहमयी, पात्रानुकूल और प्रसंगानूकूल एवं भावाभिव्यक्ति में पूर्णत: सक्षम है। मुहावरे एवं लोकोक्तियों का सहज प्रयोग मिलता हैं व्यंग्यात्मकता, चित्रात्मकता व सृर्जनात्मकता का गुण इनकी भाषा-शैली में पाया जाता है। (इन बिंदुओं पर उदाहरण-सहित प्रकाश अपेक्षित है) 3

10. रीतिकालीन काव्य राज-दरबारों में लिखा गया; इसलिए इसमें श्रृंगारिकता का आना स्वाभाविक था। श्रृंगार की प्रधानता के कारण; इसे ''श्रृंगार काल'' नाम दिया गया।

रीतिकालीन कविता की कोई तीन प्रवृत्तियां : लक्षण ग्रंथों का निर्माण, श्रृंगारिकता, भक्ति और नीति, नारी के प्रति विलासितापूर्ण दृष्टिकोण, प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण, आश्रयदाताओं की प्रशंसा आदि। (तीन प्रवृत्तियों का उदाहरण-सहित स्पष्टीकरण अपेक्षित है।) 1 + 3

अथवा

संत काव्य की तीन प्रवृत्तियाँ :

दो कवियो के नाम- (यहाँ दो संत कवियों के नामों का उल्लेख अपेक्षित)

प्रवृत्तियां : एकेश्वरवाद पर बल, निगुर्ण व निराकार ईश्वर पर विश्वास, रूढ़ियों और आडंबरों का विरोध, गुरु की महत्ता, रहस्य-भावना आदि।

प्रमुख कवि :- 1. कबीरदास, 2. गुरु नानक देव

11. 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' स्पष्टीकरण अपेक्षित- 1

चार प्रमुख विशेषताएं 4

छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह कहने का तात्पर्य है-स्थूल लौकिकता के विरुद्ध और जड़ता-रहित सूक्ष्म अलौकिक वेदना का चित्रण। इस व्यापक अलौकिक वेदना को नवीन आध्यात्मिक चेतना और सूक्ष्म अनुभूति की नवीन भगिमा के साथ नई शैली में व्यक्त करना।

प्रमुख विशेषताएं : वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति, वेदना एवं करुणा की भावना, प्रेम और सौंदर्य का वर्णन, राष्ट्रीय भावना, लाक्षणिकता एवं चित्रात्मकता, प्रकृति का मानवीकरण, मानवतावाद, गीत शैली का प्रयोग आदि।

अथवा

प्रगतिवादी काव्य की चार विशेषताएं :

दो प्रमुख कवियों के नाम

प्रमुख विशेषताएं-शोषितों के प्रति सहानुभूति, शोषकों के प्रति विद्रोह, आक्रोश एवं घृणा, क्रांति की भावना, सामाजिक रूढ़िवादिता का विरोध, सामाजिक समस्याओं का चित्रण, नारी के प्रति यथार्थवादी दृष्टि, मानवतावादी दृष्टिकोण आदि।

कवियों के नाम-रामधारी सिंह दिनकर बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह, सुमन, नरेंद्र शर्मा आदि।

12. प्रेमचंद युगीन उपन्यास-इस युग के उपन्यासकारों ने युग-जीवन को वाणी प्रदान की। प्रेमचंद ने राजनीतिक व सामाजिक स्थिति का यथार्थ अंकन करते हुए आदर्शवादी समाधान प्रस्तुत किए। 'सेवासदन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'गोदान' इनके प्रमुख उपन्यास हैं। जयशंकर प्रसाद ने अपने उपन्यासों में समाज की अनेक समस्याओं और प्रश्नों को उभारा है। वृंदावनलाल वर्मा ने ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रेम-कथाएं प्रस्तुत की। 'उग्र' ने उपन्यासों में सामाजिक धरातल को आधार बनाया, भगवती चरण वर्मा ने 'चित्रलेखा' में पाप और पुण्य की नवीन व्याख्या तथा पुनर्मूल्यांकन का स्तुत्य प्रयास किया है। जैनेद्र कुमार ने मनुष्य के अंतर्मन तथा अवचेतन मन की छानबीन के द्वारा मानव क्रियाकलापों के साथ संबंध स्थापित किया। अन्य प्रमुख उपन्यासकार-प्रसाद वृंदावनलाल वर्मा, चंडीप्रसाद हृदयेश, विश्वंभरनाथ शर्मा, उग्र, निराला आदि। 4

अथवा

प्रसाद युगीन हिंदी-नाटक : यह युग हिंदी नाटक-साहित्य का 'स्वर्ण युग' या उत्थान काल है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों में भारतीय इतिहास की भूली-बिसरी कड़ियों को जोडने का प्रयास किया है। इनके नाटकों में प्राचीन भारतीय इतिहास की गौरवशाली संस्कृति का चित्रण हुआ है। इनके नाटकों में नाटकीय सौंदर्य का पूरा उत्कर्ष है, पात्रों के चरित्रांकन एवं वातावरण के चित्रण में इन्हें विशेष सफलता मिली है। इस युग में पाँच प्रकार के नाटकों की रचना हुई–ऐतिहासिक-पौराणिक नाटक, सामाजिक नाटक, प्रतीकात्मक नाटक, हास्य-व्यंग्यप्रधान नाटक, रंगमंच से प्रभावित नाटक।

प्रसादयुगीन नाटककार : सर्व श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण प्रेमी तथा गोविंद बल्लभ पंत के नाम उल्लेखनीय हैं।

13. **निबंध-लेखन:**

(i) प्रस्तावना 1

(ii) कथ्य-निरुपण और प्रस्तुति 6

(iii) उपसंहार/ निष्कर्ष 2

(iv) भाषा-शुद्धता और शैली 3

कुल अंक : 12

14. (i) अत्यंत उच्च स्तरीय अध्यात्मिक पुरुष और वैचारिक क्षमता से विहीन व्यक्ति ही बिना कर्म के रह सकते है।

गीता कहती है- यदि तुम स्वेच्छा से कार्य नहीं करोगे तो प्रकृति तुमसे बलपूर्वक कर्म कराएगी। 1

(ii) यदि सही भावना से कार्य किया जाए तो वह धार्मिक अर्थात आध्यात्मिक साधना का स्वरूप बन जाता है। 1

(iii) सही भावना से किया गया कर्म धार्मिक हो जाता है। 1

(iv) राजनीति में प्रवेश के इच्छुक व्यक्तियों को अपने कार्य आध्यात्मिक दृष्टिकोण लेकर, परोपकारिता का उच्चभाव लेकर करने चाहिए।

सन्मार्ग पर चलते रहने के लिए परोपकारिता के भाव के साथ कार्य करते रहना चाहिए और प्रतिदिन आत्मविश्लेषण, अन्तर्दृष्टि और सतर्कता से अपना परीक्षण करते रहना चाहिए। 1

(v) किसी भी उपयुक्त शीर्षक पर शत-प्रतिशत अंक यानी 1 अंक दिया जा सकता है। 1

15. (i) अमेरिका द्वारा जापान पर गिराया गया अणुबम। 1

(ii) द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में जापान के हिरोशिमा नगर पर। 1

(iii) बम-विस्फोट अचानक हुआ था और कुछ ही क्षणों में सब-कुछ नष्ट हो गया था। 1

(iv) प्रचंड गर्मी के कारण मनुष्य नष्ट हो गए, राख बन गए। 1

(v) झुलसे हुए पत्थरों और उजड़ी सड़कों के रूप में। 1

हिंदी (ऐच्छिक)

कक्षा–12

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र–II

समय : 3 **घंटे** **पूर्णांक :** 100

1. अधोलिखित गद्यांशों में से किन्ही दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: **5+5=10**

(i) इसी से धर्म, नीति और शिष्टाचार तीनों में क्रोध के निरोध का उपदेश पाया जाता है। संत लोग तो खलो के वचन सहते ही हैं, दुनियादार लोग भी न जाने कितनी ऊंची–नीची पचाते रहते हैं। सभ्यता के व्यवहार में भी क्रोध नहीं तो क्रोध के चिह्न दबाए जाते हैं। इस प्रकार का प्रतिबंध समाज की सुख–शांति के लिए बहुत आवश्यक है। पर इस प्रतिबंध की भी सीमा है। यह पर–पीड़कोन्मुख तक नहीं पहुंचता।

(ii) आजकल भी ऐसे विद्वान मिल जाएंगे जो जानते बहुत हैं, करते कुछ भी नहीं। करने वाला इतिहास–निर्माता होता है, सिर्फ सोचते रहने वाला इतिहास के भयंकर रथचक्र के नीचे पिस जाता है। इतिहास का रथ वह हाँकता है जो सोचता है और सोचे हुए को करता भी है।

(iii) एक और फर्क यह है कि इनका नाता अपनी जड़ों और जमीन से टूटता नहीं। शायद असल फर्क वही हो। साल में एक बार ये लोग अपनी न हो तो दूसरों की फसल काटने के बहाने पुरानी जमीन पर जा अपना दिल दुबारा जिंदा कर लौट आते है। दिल्लीवालों की तरह हाशिए में टिके लोग दिल से महसूसना नहीं भूलते।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : **3+3+3=9**

(i) भारत और चीन आस्ट्रेलिया की अपार संपत्ति और अमित भूमि से वंचित क्यों रह गए? राहुल सांकृत्यायन के विचारानुसार कारण बताइए।

(ii) 'मंत्र' कहानी के आधार पर बताइए कि कैलाश ने मृणालिनी के किस आग्रह को अंततः स्वीकार कर लिया और क्यों?

(iii) 'व्यक्ति की एक झलक' के अनुसार जयशंकर प्रसाद और प्रेमचंद किस प्रकार एक दूसरे के पूरक हैं?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर जीवन-मूल्यों के प्रकाश में दीजिए : 3+3=6

(i) पर्यावरण-रक्षण के आंदोलन की चर्चा करते हुए सुंदरलाल बहुगुणा उपभोक्ता संस्कृति और सत्तासीन लोगों को पर्यावरण-विनाश के लिए जिम्मेदार क्यों ठहराते हैं?

(ii) 'मेरी जीवन यात्रा: दो चित्र' के आधार पर बताइए कि लेखक ने पहले चित्र में अध्ययन काल की किस असह्य पीड़ा का वर्णन किया है?

4. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5+5=10

(i) मोहि मूढ़ मन बहुत बिगोयो।
याके लिए सुनहु करूनामय मैं जग जनमि-जनमि दुख रोयो।
सीतल मधुर पीयूष सहज सुख निकटहिं रहत, दूर जनु खोयो।
बहु भाँतिन स्रम करत मोह बस बृथहिं मंदमति बारि बिलोयो।
करम-कीच जिय, जानि, सानि चित, चाहत कुटिल मलहिमल धोयो।
तृषावंत सुरसरि बिहाय सठ, फिरि-फिरि बिकल अकास निचोयो।
तुलसिदास प्रभु कृपा करहु अब, मैं निज दोष कछू नहिं गोयो।
डासत ही गई बीति निसा सब, कबहुँ न नाथ नींद भरि सोयो।

अथवा

जमुना के तीर बहै सीतल समीर जहां
मधुकर करत मधुर मंद सोर हैं।
कवि मतिराम तहां छवि सौं छबीली बैठी
आंगन तैं फैलत सुगंध के झकोर हैं।
पीतम बिहारी की निहारिबे को बाट ऐसी
चहुं ओर दीरघ दृगन करि दौर हैं।
एक ओर मीन मनों एक ओर कंजपुंज
एक ओर खंजन चकोर एक ओर हैं।

(ii) अभी पड़ा है आगे सारा यौवन
स्वर्ण-किरण कल्लोलों पर बहता रे यह बालक मन
मेरे ही अविकसित राग से
विकसित होगा बंधु दिगंत
कभी न होगा मेरा अंत।

अथवा

धो डालो फूलों का पराग गालों पर से
आनन पर से यह आनन अपर हटाओ तो
कितने पानी में हो इसको जग भी देखे
तुम पल भर को केवल मनुष्य बन जाओ तो।

5. (i) गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।
अमीर खुसरो के उक्त दोहे का अप्रस्तुत अर्थ स्पष्ट कीजिए। 3

(ii) 'ओ मेरे मन' कविता में जीवन के प्रति कवि के क्षोभ का क्या कारण है? 2

6. किसी एक काव्यांश के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए: 5

(i) वैभव की यह मधुशाला
जग पागल होने वाला
अब गिरा उठा मतवाला
प्याले में फिर भी हाला
यह क्षणिक चल रहा राग-रंग
जलता है यह जीवन पतंग।

अथवा

(ii) लो कब की सुधियां जगीं, आह
शिशु घन-कुरंग
पुरवा सिहकी फिर दीख गए
शिशु घन-कुरंग
शशि से शरमाना सीख गए
शिशु घन-कुरंग

7. गजानन माधव मुक्तिबोध अथवा मलिक मुहम्मद जायसी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं और काव्य-शिल्प की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 5

8. (क) 'रंगभूमि' उपन्यास की कथोपकथन-योजना सफल सिद्ध हुई है'-कथानक के विकास में सहायक कथोपकथन-योजना के अथवा पात्रों के चरित्र-चित्रण में सहायक कथोपकथन-योजना के उदाहरण देकर उपर्युक्त कथन की पुष्टि कीजिए। 4

(ख) सूरदास अथवा रानी जाह्नवी की किन्हीं चार विशेषताओं की सोदाहरण विवेचना कीजिए। 3

9. (i) 'रंगभूमि' उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। 4

(ii) 'रंगभूमि' उपन्यास की भाषा और बोली की दो-दो विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए। **4**

10. ज्ञान-मार्गी तथा प्रेम-मार्गी निर्गुण भक्ति-काव्य का अंतर स्पष्ट करते हुए प्रेम-मार्गी निर्गुण भक्ति की किन्ही तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **4**

11. प्रगतिवाद अथवा नई कविता की चार प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए। किन्ही दो कवियों का उल्लेख करना आवश्यक है। **5**

12. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी-निबंध अथवा हिंदी-नाटक के विकास का वर्णन कीजिए। **4**

13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग चार सौ शब्दो में निबंध लिखिए : **12**

(i) लोकतंत्र में चुनाव
(ii) हमारी संस्कृति के परिचायक हमारे पर्व-त्योहार
(iii) नि:स्वार्थ सेवा
(iv) लोभी और लालची मन
(v) हिंदी-साहित्य: पाठकों का अभाव

14. अवतरण को ध्यान से पढ़िए और तत्संबंधी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हिंदी रंगमंच की गतिविधियां बढ़ रही हैं। रंग-महोत्सव के अवसर पर रंगमंच पर नाटकों का प्रदर्शन होता है। हिंदी-रंगमंच से अनेक अनूदित नाट्य रचनाएं प्रस्तुत की जा रही है। हिंदी में मौलिक रंग-नाटकों का अभाव है। रंगमंच की मांग पर हिंदी-लेखकों ने भी लिखना शुरू किया है। अधिकांश लेखक-कहानीकार जब नाटक की रचना करते हैं तो कई बार विधागत भेद भुला देते हैं। कहानी की वस्तु को पात्रों के सपाट संवादों में कह देने से वह कथावस्तु नाटक नहीं बन जाती। कविता या संगीत आदि के माध्यम से काव्य को संवाद-शैली में प्रस्तुत करने पर भी कोई रचना नाटक नहीं हो जाती। रंग नाटक वही होता है, जिसे मंच पर भली-भांति खेला जा सके।

नाटक का अपना विधागत स्वरूप होता है। यह कहानी अथवा कविता के स्वरूप से भिन्न होता है। अभिनय-प्रदर्शन, मंच-सज्जा और नाटकीय कार्य-व्यापार की प्रस्तुति से रंग-नाटक खिलता है। अत: रंग-नाटक की रचना को रंग-वस्तु की अपेक्षाओं के रूप में ही जाना-पहचाना जा सकता हैं। कहानी का रूपांतरण हो या मौलिक रचना-नाटक अपने रूप और रंग से देश में अलग साहित्यिक सत्ता रखता है।

(i) हिंदी-रंगमंच पर अनूदित नाटकों की प्रस्तुति का क्या कारण है? 1
(ii) कहानी के पात्रों के सपाट संवादों से रंग-नाटक क्यों नहीं बनता? 1
(iii) रंग-नाटक का तात्पर्य क्या है? 1
(iv) रंग-नाटक किस प्रकार खिलता है? 1
(v) रंग-नाटक की वस्तु को कैसे परखा-पहचाना जा सकता है? 1

15. अधोलिखित काव्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा तत्संबंधी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कलम आज उनकी जय बोल
पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रहीं लू लपट दिशाएँ।
जिनके सिंहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल।
कलम आज उनकी जय बोल।।
अंधा चकाचौंध का मारा,
क्या जाने इतिहास बिचारा।
साक्षी हैं जिनकी महिमा के–
सूर्य, चंद्र, भूगोल, खगोल।
कलम आज उनकी जय बोल।

(i) स्वाधीनता संग्राम के शहीदों के सिंहनाद से आज भी धरती क्यों डोल जाती है? 1

(ii) 'क्या जाने इतिहास बिचारा' कहकर कवि इतिहास को युग का दपर्ण क्यों नहीं मानता? 1

(iii) स्वाधीनता के वीर बलिदानियों की महिमा के साक्षी सूर्य, चंद्र, भूगोल, खगोल क्यों बताए गए हैं? 1

(iv) कलम से किन की जय बोलने का आग्रह किया गया है और क्यों? 1

(v) काव्यांश के शैली–सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए। 1

हिंदी (ऐच्छिक)
कक्षा–12
प्रतिदर्श प्रश्नपत्र– II
अंक–योजना, उत्तर–संकेत और मूल्य–बिंदु

समय : 3 **घंटे** **पूर्णांक :** 100

प्र. संख्या	**अपेक्षित उत्तर–संकेत एवं मूल्य–बिंदु**	**अंक–विवरण/योग**
1.	केवल दो गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित	5+5=10
	अंक–विभाजन इस प्रकार है:	
	(i) संदर्भ–कथन, रचनाकार और रचना का उल्लेख	½+½ =1
	(ii) पूर्वापर संबंध/ प्रसंग–कथन	½
	(iii) समुचित स्पष्ट व्याख्या	2½
	(iv) भाषा–शैली पर टिप्पणी	1
	कुल अंक : 5 x 2 =10	

(क) (i) रामचंद शुक्ल–'क्रोध'

(ii) लेखक क्रोध के स्वरूप तथा उसके अन्य मनोविकारां से संबंध का विश्लेषण करते हुए लोक–कल्याण की दृष्टि से क्रोध की सार्थकता और उपयोगिता पर प्रकाश डालते हैं, क्योंकि क्रोध को शांति भंग करनेवाला मनोविकार माना गया है।

(iii) शुक्ल जी मानते हैं कि धर्म, नीति और शिष्टाचार के अंतर्गत क्रोध के निरोध का आदेश है। संत स्वभाव के लोग दुष्टों के दुर्व्यवहार को सह लेते है। समझदार सांसारिक लोग भी ऐसे व्यवहार पर आग नहीं उगलते। सभ्यता का तकाजा है कि क्रोध का प्रदर्शन न

करें। समाज में इस प्रकार की पाबंदी से अमन-चैन रहता हैं यह स्थिति समाज के लिए जरूरी है। शुक्ल जी इस पाबंदी की भी एक सीमा मानते हैं। इसका लाभ यह है कि यह दूसरों में क्रोध नहीं भड़काती। उन्हें कष्ट नहीं देती।

विशेष-टिप्पणी : तत्सम शब्द-प्रधान शैली विषयानुकूल है; सारगर्भित वाक्यों का प्रयोग निबंध में संक्षिप्तता लाता है, 'कितनी ऊंची-नीची पचाते हैं, में पूर्वी हिंदी का प्रयोग।

(ख) (i) **हजारी प्रसाद द्विवेदी, 'भीष्म को क्षमा नहीं किया गया'।**

(ii) व्यक्तित्व व्यंजक और आत्मपरक शैली में द्विवेदी जी भीष्म पितामह के चरित्र-विश्लेषण से इतिहास के एक सिद्धांत-विशेष की स्थापना करते हैं।

(iii) महाभारत काल की बात छोड़िए, आजकल भी बहुत से सूचना-संपन्न ज्ञानी और विद्वान मिल जाते हैं। ये लोग सोचते बहुत-कुछ हैं, लेकिन करते कुछ भी नहीं। इतिहास-निर्माता का लक्षण यह है कि वह करता है, सिर्फ सोचता नहीं। इतिहास का निर्माता और संचालक वही होता है जो अच्छी तरह विचार करता है और विचार किए हुए को करता भी है। विचार को कर्म से जोड़कर चलता है। इतिहास का रथ केवल वही खींचता है। विचार-विद्या और ज्ञान का अपार भंडार रखने वाला यदि कुछ करता नहीं है तो इतिहास के पहिए के नीचे कुचल दिया जाता है। भीष्म में अपार विद्या और ज्ञान था, लेकिन कृतित्व से जुड़ाव न होने के कारण वे इतिहास-निर्माता न बन सके।

विशेष-टिप्पणी : 'समय की शिला', 'रथ और रथचक्र' शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्ति-कौशल चमक उठा है। 'रथचक्र के नीचे पिस जाना' आदि व्यंजनापरक अभिव्यक्ति हैं। आजकल के संकट में महाभारत के इस चरित्र ने सम-सामयिक औचित्य प्रदान किया है। यह भाषा-शैली का नया रूप है तर्क-प्रधान, विश्लेषणपरक शैली है।

(ग) (i) मृदुला गर्ग, **'दिल से गए दिल्ली में'।**

(ii) मृदुला गर्ग ने इस आत्मपरम निबंध में दिल्ली-निवासियों के पाखंड और दिल्ली में बढ़ती शहरी जनता के विषय में खोजपूर्ण, जिंदादिल और यथार्थ को दर्शाते हुए दूर-पास के कस्बों से आनेवाले लोगों का विवरण दिया है। गांव-के ये गरीब लोग दिल्ली के मूल निवासियों से भिन्न हाशिए पर बताए गए है।

(iii) ये लोग मस्ती से दिल्ली में रहते हैं लेकिन इनमें असली दिल्लीवालों से एक बड़ा अंतर है। यह अंतर है कि ये लोग आज भी अपने पैतृक निवास से जुड़े हैं। भले ही वहां इनकी जमीन है या नहीं है। ये लोग उस जड़-जमीन से जुड़े हैं। साल में एक बार वहां की तीर्थयात्रा अवश्य करते हैं। वे फसल काटने के बहाने जाते हैं। अपने मन को तरो ताजा करके दिल्ली लौट आते हैं। दिल्ली वालों के दिल के हाशिए में टिके ये लोग हृदय से महसूस करना जानते हैं, जबकि दिल्ली वालों के दिल कदाचित महसूसते ही नहीं। अर्थात् दिल्ली वाले संवेदनाशून्य हो चुके हैं।

निबंध की भाषा दिल्ली की संस्कृति की परिचायक है। व्यंग्यात्मक उक्तियों में उर्दू-हिंदी शब्दों का अनूठा प्रयोग है। हिंदी-गद्य पर जमी तत्समी शैली को लेखिका ने तोड़ा है। यह भाषा सहज, सुबोध और प्रवाहपूर्ण है।

2. तीनों प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं : 3+3+3=9

(i) भारत और चीन आस्ट्रेलिया की अपार संपत्ति और अमित भूमि से इसलिए वंचित रह गए, क्योंकि वे घुमक्कड़ी धर्म छोड़ बैठे और भूल गए कि उनके पास कितना संपन्न क्षेत्र खाली पड़ा है। भारत और चीन यूरोपीयों की अपेक्षा आस्ट्रेलिया के निकट थे, किन्तु स्वभाव से घुमक्कड़ यूरोपीयों ने आस्ट्रेलिया को हथिया लिया और भारत-चीन अपने में ही सिमटे रहे।

(ii) कैलाश सर्प-प्रदर्शन- कला का माहिर कलाकार था। उसने कितने ही सर्प पाल रखे थे। मृणालिनी उससे अकसर आग्रह करती–तुम्हारे सांप कहां हैं? जरा मुझे दिखा दो। वह कल दिखाने का सुझाव देकर टाल देता था। एक दिन कई मित्रों की उपस्थिति में उसने आग्रह किया तो कैलाश ने टाल दिया। मृणालिनी की झेंपी हुई सूरत देखकर उसे लगा कि मृणालिनी को उसका इंकार बुरा लगा है। कैलाश ने मृणालिनी और अन्य मित्रों के सामने सर्प-कला-प्रदर्शन का परिचय दिया।

(iii) प्रेमचंद का साहित्य दु:ख के आधार पर स्थित है। प्रेमचंद ने आनंद के रचनात्मक पक्ष पर अधिक ध्यान नहीं दिया। इसके विपरीत प्रसाद सुसंस्कृत, स्वस्थ नारी और पुरुष-शक्ति का रहस्य प्रकट करते हैं। इसलिए प्रसाद शक्ति के साधक हैं। इस प्रकार प्रसाद और प्रेमचंद एक दूसरे के पूरक हैं।

3. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में क्रम से 3 बिंदुओं का उल्लेख आवश्यक है। प्रत्येक बिंदु पर एक-एक अंक।

(i) उपभोक्ता संस्कृति के लिए नई वस्तुओं का उत्पादन हो रहा है। उन्हें नए आकर्षक पैकेटों में बेचा जाता है। इससे नए-नए कारखाने खुल रहे हैं और वातावरण में विष घुल रहा है। सत्ता से जुड़े लोग पूरे तंत्र पर हावी हैं। उनके हाथ में राजनीतिक, आर्थिक शक्तियां हैं। वे विकास के नाम पर पर्यावरण-विनाश पर तुले हैं। 1 + 1 + 1 = 3

(ii) नीची जाति के बच्चों को पढ़ने पर भी अपमान की असह्य पीड़ा से गुजरना पड़ता है। शिक्षा और जागरूकता द्वारा ही इससे मुक्ति पाई जा सकती है। 1 + 1 + 1 = 3

4. किन्हीं दो काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित है :

अंक-विभाजन इस प्रकार है :

(i) रचनाकार और रचना का उल्लेख	½+½=1
(ii) पूर्वापर संबंध/ प्रसंग-कथन	½
(iii) काव्यांश की व्याख्या	2½
(iv) भाषा-शैली और काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी	1
कुल अंक :	5X2=10

(क) (i) तुलसीदास, कवित्त और पद-'विनय-पत्रिका' का पद

(ii) 'विनय-पत्रिका' के इस पद में तुलसीदास ने भक्ति से विरक्ति के कारण का स्पष्टीकरण किया है। मनुष्य की संसार के प्रति आसक्ति के परिणामस्वरूप उस विरक्ति-बोध से उपजे प्रायश्चित का निवेदन कवि प्रभु के सम्मुख प्रस्तुत करते है।

(iii) हे प्रभु! मेरे मन ने मेरा बहुत नुकसान किया है। मन की हानिकारक भूमिका के फलस्वरूप मुझे बराबर संसार में जन्म लेते रहना पड़ा है। अब मुझे यह स्मृति दुःख दे रही है। मेरे हृदय में ही शीतल, मधुर, अमृत का सहज सुख था, लेकिन मैंने वह ऐसे खो दिया मानो वह बहुत दूर है। संसार के प्रति मोहवश बहुत प्रकार से श्रम साधता रहा। मैं मूर्ख व्यर्थ ही जल को मथता रहा। कर्मों के कीचड़ को ही चित्त में लगाए कुटिल मन के मल में ही नहाता रहा। मैं कितना मूर्ख हूं कि गंगा नदी के समस्त जल को छोड़कर मारा-मारा फिर रहा हूं। व्यर्थ ही आकाश को निचोड़ता रहा हूं।

तुलसीदास प्रभु की कृपा चाहते हैं कि अब मैं आपको अपने सब अवगुण बता चुका हूं। कुछ भी गुप्त नहीं रहा है। यहां तो दिन-रात, सुख-सुविधा के उपाय करते-करते ही जीवन बीत गया। एक पल भी चैन से नहीं रहा। सविनय प्रायश्चित का निवेदनकर्ता तुलसी अपने प्रार्थनापत्र के साथ राम के सम्मुख उपस्थित है।

विशेष : पद शैली की रचना है। आत्म-निवेदन की अभूतपूर्व शैली में 'सीतल मधुर पीयूष सहज सुख निकटई रहत दूर जनु खोयो' में बृथहि मंदमति वारि बिलोयो, फिरि-फिरि विकल अकास निचोयो में अनुप्रास रूपक, उत्प्रेक्षा अलंकार, करुनामय, पीयूष, तृषावंत, मंदमति, दोष आदि तत्सम शब्दों का सार्थक प्रयोग किया है। 'वारि बिलोयो' 'अकाश निचोयो' आदि में लक्षणा का अपूर्व प्रयोग।

अथवा

(ख) (i) मतिराम : 'सौंदर्य और श्रृंगार'

(ii) यमुना के किनारे अपने प्रियतम (कृष्ण) की प्रतीक्षा में बैठी नायिका राधा के आकुल नेत्रों की चंचलता का चित्रण महाकवि मतिराम करते हैं।

(iii) यमुना तट पर शीतल-मंद समीर बह रहा है। मधुकर अपने अधुर शोर से वातावरण को मधुर बना रहे हैं। मतिराम कवि कहते हैं कि ऐसे सुखद समय में अपनी संपूर्ण सुंदरता के साथ सौंदर्यश्री राधा बैठी हैं। उनके अंगों से सुगंध के झोंके फैल रहे हैं। राधा जी अपने प्रियतम ब्रज-बिहारी श्रीकृष्ण का दर्शन पाने के लिए अपने बड़े-बड़े नेत्रों को इधर-उधर दौड़ा रही हैं। उनके चंचल नेत्र कभी चंचलता के कारण मछली जैसे, कभी सुंदरता के कारण कमल जैसे, कभी कालिमा के कारण खंजन जैसे, तो कभी एकाग्रता के कारण चकोर जैसे दुष्टिगोचर होते हैं।

विशेष : कवित्त छंद अनुपम है। अनुप्रास अलंकार का प्रभाव सर्वत्र है। अंतिम पंक्तियों में उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग है।

(ख) (i) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'-'ध्वनि' कविता

(ii) निराला अपने जीवन में निराशा और कठिनाइयों से जूझते रहे। उनके इस जीवन पर लोगों ने नुक्ताचीनी की। निराला अपने साहित्यिक खेल की पारी समाप्त कर चुके थे। किन्तु कवि अपने जीवन का इसे प्रथम चरण मानते हैं। वे नहीं मानते कि यहां मृत्यु की उपस्थिति है।

अभी आगे संपूर्ण जीवन पड़ा है। सुविधा-असुविधा, आशा-निराशा, सुख-दु:ख की चिंता किए बिना मेरा यह बालक-मन कनक किरणों से खेलता रहता है। दिशाएँ मेरे ही अविकसित राग से विकसित होंगी। कवि का रचनाधर्मी कृतित्व ही विकास का शंखनाद करेगा। उससे दसों दिशाएं गूंजेंगी। जो समझ रहे हैं कि मेरा अंत निकट हैं, वे समझ लें कि मेरा अंत अभी क्या, कभी नहीं होगा।

विशेष : 'स्वर्ण' किरणों से खेलता बालक मन' कवि के विराट व्यक्तित्व की व्यंजना करता है। कवि अपने प्रयत्न से संसार में नव जीवन का संचार करने का आत्म विश्वास प्रकट करता है। नव गीत की शैली में रचित यह गीत संगीतात्मकता लिए है। तत्सम शब्दावली का ठाठ बराबर बना हुआ है।

अथवा

(i) रामधारी सिंह 'दिनकर', 'तुम क्यों लिखते हो।'

(ii) रामधारी सिंह 'दिनकर' रचनाकारों का आह्वान करते हैं कि उन्हें कोरी कल्पना और हवाई किले बनाने के बदले जीवन की वास्तविकताओं और सच्चाइयों को समझने और अभिव्यक्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

कलम के कलाकारों, कल्पना से किलोल- मात्र करना लिखने का औचित्य प्रकट नहीं करता। तुम मन की बहुत-सी उड़ान भर चुके हो, लेकिन उसमें सार क्या है? उसकी सार्थकता क्या है?

इसलिए कवियों और लेखकों से कहता हूं कि 'रूप सौंदर्य' का आकर्षण त्याग दो। चेहरे को पुष्प-पराग के लेप से सुंदर मत बनाओ। अर्थात असली चेहरे पर नकली चेहरा मत लगाओ। जीवन की वास्तविकता, असली रंग रूप में है, कल्पना- पुते कपोल की छवि में नहीं है। नकली प्रदर्शन-प्रियता से मुक्त होकर अपनेपन में प्रस्तुत हो जाओ ताकि दुनिया जान ले कि तुम्हारी असलियत क्या है? अंतत: कवि रचनाकारों को याद दिलाता है कि तुम मनुष्य बन जाओ। मनुष्य के रूप में मनुष्य के जीवन को देखो, समझो और लिखो। कदाचित लिखने का औचित्य और सार्थकता यही है।

विशेष : फूलों का पराग होना-एक चेहरे पर कई चेहरे सजाने का लाक्षणिक प्रयोग है। ओजपूर्ण तथा तर्कसंगत कवि-कर्म अपूर्व है। 'कितने पानी में हो' की मुहावरेदार शैली ने भी कविता में प्राण-संचार किया है। 'केवल मनुष्य बन जाने का आग्रह' सार-गर्भित सूक्ति है।

5. (i) प्रस्तुत दोहा अमीर खुसरो ने अपने गुरु पीर निजामुद्दीन औलिया के निधन पर कहा था। सूफी संत भी पीर को पैगंबर का दर्जा देते हैं। अध्यात्म में गौरी ब्रह्म स्वरूप है जो जग के प्राणियों से ओझल है। चेतना पर आवरण पड़ गया है। ऐसे में खुसरों अपने घर लौटने की बात भी अध्यात्म स्तर पर कहते है। गुरु गए तो प्रकाश गया। अब तो चारों ओर अंधकार ही है। अत: खुसरो के जीवन का अब कोई औचित्य नहीं रहा। 3

(ii) क्षोभ के अनेक कारण हैं। जीवन स्वार्थी हो गया। हम संवेदनहीन हो गए हैं। परोपकार से मुंह मोड़ने लगे हैं। लोक-हित या करुणा को अपने-अपने जीवन से हमने निकाल दिया है। तर्क के साथ विचार करना छोड़ दिया है। 2

6. किसी एक काव्यांश के सौंदर्य की सराहना अपेक्षित है। दोनों के दो-दो बिंदु अपेक्षित।

अंक-विभाजन इस प्रकार है :

(i) भाव-सौंदर्य 2

(ii) शिल्प-सौंदर्य 2

(iii) भाषा-शैली की विशेषताएँ 1

कुल अंक : 5

(i) 'वैभव की यह मधुशाला.....जीवन पतंग।'

भाव-सौंदर्य : अशोक के मन की दशा का स्वाभाविक चित्रण, सांसारिक सुखों की क्षणिकता पर बौद्ध धर्म का प्रभाव है।

संसार के मादक सौंदर्य पर आसक्त व्यक्ति की स्थिति मधुशाला में मधु पीकर पागल होने वाले और गिर-गिर कर संभलने और फिर गिरने वाले व्यक्ति जैसी है।

शिल्प-सौंदर्य : सांग रूपक-मधुशाला, 'हाला पीने वाला' का सार्थक प्रयोग।

वैभव का मद उत्तेजक होता है। इसमें डूबा व्यक्ति मधुशाला में मधु पीकर भी शांत न होने वाले व्यक्ति जैसा होता है।

सरल शब्दावली में सुंदर चित्रण, तुकांत मात्रिक छंद।

(ii) 'लो कब की सुधियां.....शिशुघन कुरंग।

भाव-सौंदर्य : यहाँ बादलों को चंचल हिरण-शावक माना गया है। बादल पूर्वा के कारण लुक-छिप रहे हैं और विभिन्न रूपों में दिखाई पड़ रहे हैं।

शिल्प-सौंदर्य : अनुप्रास और रूपक अलंकार।

सुधियों से तुलना : अप्रस्तुत से प्रस्तुत की तुलना।

बादलों के बदलते रूपों और उनकी चंचलता का सहज चित्रण।

7. किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय अपेक्षित है

अंक-विभाजन इस प्रकार है :

(i) सामान्य जीवन-परिचय: 2

(ii) रचनाओं का उल्लेख: 1

(iii) काव्य शिल्प-विवेचन: 2

कुल अंक : 5

- **गजानन माधव मुक्तिबोध**

(i) मध्यप्रदेश, ग्वालियर जनपद के श्योपुर गांव में 1917 में जन्में, पिता पुलिस सब इंसपेक्टर। तबादलों के कारण पढ़ाई टूटती-जुड़ती रही। 1954 में नागपुर विश्वविद्यालय से एम. ए. हिंदी। पिताजी से ईमानदारी, न्यायप्रियता और इच्छाशक्ति की प्रेरणा। 'नया खून' पत्रिका का संपादन। दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव, मध्यप्रदेश में अध्यापन। हिंदी-विभाग के अध्यक्ष। 1964 में मृत्यु।

(ii) 'चांद का मुंह टेढ़ा है' 'भूरी-भूरी खाक धूल' तथा छह खंडों में 'प्रकाशित-मुक्तिबोध रचनावली।'

(iii) नई कविता का प्रमुख कवि, विशिष्ट काव्य-शिल्प, बेहतर समाज-निर्माण की आकांक्षा, बिंब और प्रतीकों का कविता में प्रयोग, फैंटेसी के शिल्प-विस्मय का प्रयोग। लंबी कविता रचना के जनक। विडंबनाओं और बिदूपताओं का चित्रण।

अथवा

- **मलिक मुहम्मद जायसी**

(1482-1542) उत्तरप्रदेश, अमेठी के निकट जायस के रहने वाले। पहुंचे हुए फकीर, सैयद असरफ और शेख बुरहान के शिष्य। सूफी-मार्गी काव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि।

रचनाएं : 'पद्मावत्' 'अखरावट' और 'आखिरी कलाम'।

फारसी और संस्कृत शब्दों से युक्त ग्रामीण अवधी भाषा, मसनवी शैली, दोहा-चौपाई छंद, लोक-जीवन की व्यापक पैठ है। उपमा, रूपक, लोकोक्ति और मुहावरों का भरपूर प्रयोग। काव्य-भाषा पर लोक-संस्कृति का प्रभाव। 'पद्मावत' प्रेम काव्य-परंपरा का सर्वश्रेष्ठ प्रबंध काव्य है।

8. 'रंगभूमि' पर आधारित दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं;

अंक-विभाजन इस प्रकार है :

(i) कथन का स्पष्टीकरण 1

प्रसंग-संकेत के अंतर्गत कथोपकथन के उदाहरणों से कथन की पुष्टि- 3

(ii) चरित्र का सामान्य परिचय तथा कथ्य = 3

किन्ही चार विशेषताओं का उदाहरण सहित उल्लेख शैली = 1

(क) 'रंगभूमि' उपन्यास में कथोपकथन-योजना उपन्यास कला के निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति में सफल रही है :

(i) कथानक के विकास में

(ii) कथानक की विलुप्त कड़ियों को जोड़ने में

(iii) घटनाओं की पृष्ठभूमि के निर्माण में

(iv) पात्रों के चरित्र-चित्रण में

2. कथानक के विकास में सहायक कथोपकथन-योजना के उदाहरणों से पुष्टि। क्लार्क व सोफी के बीच आज्ञापत्र को लेकर जो संवाद हुए, उन उदाहरणों से कथन की पुष्टि कर सकते हैं।

जैसे:-

क्लार्क : क्या करती हो सोफी, खुदा के लिए जिद मत करो।

सोफी : जेल के दरोगा के नाम हुकुम लिखूंगी। यह कहकर टाइपराइटर पर बैठ गई।

क्लार्क : यह अनर्थ न करो सोफी, गजब हो जाएगा।

सोफी : मैं गजब क्या, प्रलय से भी नहीं डरती।

चरित्र-चित्रण में सहायक, कथोपकथन-योजना के अंतर्गत प्रसंग-संकेत के साथ संवादों के उदाहरण दें।

2. पात्रों के चरित्र-चित्रण में 'रंगभूमि' की कथोपकथन-योजना अद्वितीय है। जैनब और रकिया के संवाद के उदाहरण दे सकते है। जैसे जैनब रकिया को खाल के लेनदेन के गुर बताती है।

रकिया : क्या करूं बहन, मैं डरती हूं, कहीं बहुत सख्ती से निशाना खाली न जाए।

जैनब : वह अहीर रूपए लाएगा। ताहिर को आज ही से भरना शुरू कर दें। बस, अजाब का खौफ दिलाना चाहिए। उन्हें हत्थे चढ़ाने का यही ढ़ंग है।

(ख) **सूरदास का चरित्र-चित्रण :** निम्नलिखित में से किन्ही चार विशेषताओं का सौदाहरण उल्लेख:

'रंगभूमि' का प्रमुख पात्र है- सूरदास

(i) क्षीण-काय अंधा भिखारी

(ii) विवाह के प्रति उदासीन

(iii) पुश्तैनी जमीन के प्रति असीम मोह

(iv) औद्योगीकरण का विरोधी

(v) भतीजे मिठुआ के प्रति असीम प्यार का भाव

किन्हीं चार विशेषताओं पर प्रकाश डालना अपेक्षित।

अथवा

(ख) रानी जाह्नवी की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख।

(i) एक आदर्श पात्र है। बनारस के धनी क्षत्रिय जमींदार की अर्धांगिनी।

(ii) प्रदर्शन-प्रिय

(iii) पति-परायणा

(iv) अतिशय महत्वाकांक्षी

(v) निरंतर सक्रिय

(vi) स्वास्थ्य-निर्माण में सक्षम

(vii) सौंदर्य, शील और भावमय, आकर्षक व्यक्तित्व आदि से किन्हीं चार विशेषताओं पर प्रकाश।

9. (क) 'रंगभूमि' सौद्देश्य रचित उपन्यास है। निम्नलिखित में से किन्हीं दो का उल्लेख अपेक्षित:

(i) जीवन को खेल समझने की धारणा को प्रतिष्ठित करना।

(ii) देशोद्धार हेतु जन-जाग्रति पैदा करना। 2+2=4

(iii) गांधीवाद के समर्थन तथा क्रांतिकारियों की गतिविधियों के चित्रण आदि पर प्रकाश।

(ख) 'रंगभूमि' की भाषा की 4 विशेषताएं: 2

शैली की दो विशेषताएं 2

भाषा : शब्दावली के प्रयोग की दृष्टि से तत्सम, तद्भव, देशज, उर्दू-फारसी, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग, मुहावरे, लोकोक्ति तथा सूक्तियों के प्रयोग।

चित्रात्मक भाषा, पात्रानुकूल, अलंकारिक भाषा आदि विशेषताओं में चार का उल्लेख।

शैली : सजीव, प्रवाहपूर्ण, भावपूर्ण, आदि में किन्ही दो का उल्लेख अपेक्षित।

10. (i) ज्ञान मार्गी और प्रेम मार्गी निर्गुण भक्ति के अंतर का स्पष्टीकरण अपेक्षित। 1

(ii) ज्ञान मार्गी अथवा प्रेम मार्गी भक्ति की विशेषताओं/ प्रवृत्तियों में से किन्ही 3 का उल्लेख। 3

11. (i) प्रगतिवाद की किन्ही चार प्रमुख प्रवृत्तियों की विवेचना तथा दो कवियों का उल्लेख: 4

(ii) विवेचन की भाषा-शैली 1

अथवा

(i) 'नई कविता' की चार प्रमुख प्रवृत्तियों की विवेचना तथा दो कवियों का उल्लेख :
(ii) विवेचन की भाषा-शैली

12. (i) स्वातंत्र्योत्तर हिंदी-निबंध की विकास-यात्रा का वर्णन- 3
(ii) वर्णन की भाषा शैली- 1

13. लगभग 400 शब्दों में निबंध-लेखन अपेक्षित है।

अंक-विभाजन इस प्रकार है :

(i) भूमिका 1
(ii) विषय-प्रतिपादन (कम से कम चार बिंदुओं का तर्क-संगत प्रतिपादन) 8
(iii) उपसंहार 1
(iv) विषय-प्रतिपादन शैली/समग्र प्रभाव 1
(v) शुद्ध भाषा 1

कुल अंक: 12

14. प्रत्येक प्रश्न के सही उत्तर पर 1 अंक दें- (कुल अंक -5)

(i) हिंदी रंगमंचीय नाटकों में मौलिक नाटकों की कमी।
(ii) रंग नाटक संवाद के अभिनय प्रदर्शन से बनता है। कथा-संवाद कहने की कला-मात्र होते हैं
(iii) रंग-नाटक वह कहलाता है, जिसे मंच पर खेला जा सके।
(iv) रंग-नाटक अभिनय, मंच– सज्जा, तथा नाटकीय कार्य-व्यवहार की प्रस्तुति से खिलता है।
(v) रंग-नाटक की वस्तु को रंगवस्तु की अपेक्षाओं के रूप में परखा-पहचाना जा सकता है।

15. प्रत्येक उत्तर के लिए एक-एक अंक। (कुल अंक-5)

(i) आज भी स्वाधीनता के शहीदों की वीरगाथा रोमांचित कर देती है। उनके सिंहनाद से आज भी पृथ्वी काँप जाती है। विदेशी सत्ता उसका ताप नहीं सह पाई।

(ii) कवि की मान्यता है कि इतिहास में स्वार्थ-प्रेरित कुछेक लोगों का वर्णन मिलता है। सच्चे वीरों के वृत्तांत इतिहास में नहीं मिलते। इतिहास युग का दपर्ण नहीं हैं। इसीलिए इतिहास को बेचारा व अनजाना कहा है।

(iii) स्वतंत्रता के शहीदों के चश्मदीद गवाह सूरज, चांद, जमीन और आकाश इसलिए बताए हैं, क्योंकि उन्होंने सत्य देखा है और वे इतिहास की भांति अंधे नहीं हैं।

(iv) कवि चाहता है कि लेखनी उन बलिदानी वीरों की जय-जयकार करे, जिन्होंने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर प्राण निछावर कर दिए और उनके बलिदान की आग से आज भी अंग्रेजी सत्ता थर्राती है।

(v) इस ओज गुण संपन्न काव्यांश में लक्षणा शब्दशक्ति का प्रभावी प्रयोग हुआ है। तत्सम शब्दों का पर्याप्त प्रयोग। भाषा प्रवाहपूर्ण। देश-प्रेम की भावना के चित्रण में भाषा-शैली सफल हुई है।